1

707

drishti | दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-12
(प्रश्न पत्र-II)

DTVF / OPT-24 **HL-2412**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): Payal Gwalwanshi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 12, 30 Aug. 2024

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

0	8	2	2	5	9	1

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

drishti | दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

drishti | दृष्टि The Vision

खण्ड - क

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) सँदेसनि मधुबन-कूप भरे।

जो कोउ पथिक गए हैं ह्याँ ते फिरि नहिं अवन करे।।

कै वै स्याम सिखाय समोधे कै वै बीच मरे?

अपने नहिं पठवत नँदनंदन हमरेउ फेरि धरे।।

मसि खूँटी कागर जल भींजे, सर दव लागि जरे।

पाती लिखैं कहो क्यों करि जो पलक-कपाट अरे?

संदर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकाल के कृष्णभक्ति धारा के चितेरे कवि सूरदास के भ्रमरगीतसार से लिया गया है।

प्रसंग- भ्रमरगीतसार में गोपियों का विरह वर्णन और उद्धव को सगुण भक्ति का ज्ञान दिया गया है।

व्याख्या- एक गोपी कहती है मथुरा मे इतने संदेश भेजे गए जिससे ~~एक~~ कूँआ भर गया होगा। जो भी पथिक यहाँ से हमारे संदेश लेकर गये वे पुनः लौटकर नहीं आये शायद हो सकता है कि श्रीकृष्ण ने उन्हें समझा-बुझा दिया होगा या उनकी बीच में ही मृत्यु हो गयी होगी। श्रीकृष्ण कितने

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

चालाक है वे स्वयं तो संदेश भेजते नहीं है और हमारे संदेश रख लेते है। यह भी हो सकता है कि मथुरा मे स्याही खत्म हो गई हो, जल मे भीग गये हो या आग मे जल गये हो। जिनके आँखों मे पलकों का कपाट लगा रहता है वह कैसे हमारे संदेश का जवाब देंगे।

भाव सौन्दर्य

(1) गोपियों द्वारा श्रीकृष्ण की उनके प्रति उदासीनता पर आक्षेप किया गया

(2) उलाहना पूर्ण प्रश्न शैली का सुंदर प्रयोग

(3) गोपियों का विरह वेदना मार्मिक

शिल्प सौन्दर्य

(1) ब्रजभाषा

(2) प्रश्नात्मक शैली में संवाद

(3) उपमा अलंकार + उत्प्रेक्षा अलंकार

(4) हिं कारक व्यवस्था

(5) प्रतीकों, बिम्बों का सुंदर प्रयोग

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) मोह-मद-मात्यो, रात्यो कुमति कुनारि सों,
बिसारि बेद लोक-लाज, आँकरो अचेतु है।
भावै सो करत, मुँह आवै सो कहत कछु,
काहू की सहत नाहिं, सरकस हेतु है।
'तुलसी' अधिक अधमाई हू अजामिल तें,
ताहू में सहाय कलि कपट-निकेतु है।
जैबे को अनेक टेक, एक टेक ह्वैबे की, जो
पेट-प्रिय-पूत-हित रासनाम लेतु है।।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सौन्दर्य- प्रस्तुत पंक्तियाँ रामभक्तिकाव्यधारा के महान कवि तुलसीदास की कवितावली के उत्तरकाण्ड से ली गई है।

प्रसंग -

व्याख्या - तुलसीदास द्वारा रामराज्य की स्थापना पर बल दिया गया है और तात्कालिक समाज पर आक्षेप। वे कहते हैं कि जहाँ मोह, माया न हो, लोक लाज का ध्यान रखा जाता हो, किसी को दुःख न पहुँचाया जाता हो। जहाँ अधर्म न हो; कपट, भोग, वासना न

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

हो। वहाँ सभी रामनाम का जाप करते थे वहीं रामराज्य की कसौटियों को पूरा करते थे।

काव्य सौन्दर्य

(1) रामराज्य की स्थापना पर बल
(2) सामाजिक - आर्थिक समस्याओं का वर्णन

शिल्प

- अवधी + ब्रजभाषा
- अलंकार का सुंदर प्रयोग
- प्रतीक + बिम्बयोजना

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) चुराता न्याय जो, रण को बुलाता भी वही है,
युधिष्ठिर! स्वत्व की अन्वेषणा पातक नहीं है।
नरक उनके लिए, जो पाप को स्वीकारते हैं;
न उनके हेतु जो रण में उसे ललकारते हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के महान प्रगतिवादी कवि रामधारी सिंह दिनकर की कुरुक्षेत्र कविता से उद्धृत है।

प्रसंग - भीष्म पितामह द्वारा युधिष्ठिर को युद्ध की नैतिकता और न्याय की स्थापना पर चर्चा की गई है।

व्याख्या - भीष्म पितामह युधिष्ठिर से कहते है कि जो न्याय को नहीं समझते है, जो न्याय से पीछा छुड़ाना चाहते है वही युद्ध को बुलाते है। परन्तु हे युधिष्ठिर स्वयं की खोज के लिये युद्ध करना कोई पाप का कार्य नहीं है। नरक उनके लिये है

drishti | दृष्टि The Vision

जो पाप करते है, न कि उनके लिये जो पाप के विरुद्ध युद्ध के मैदान मे उतरते है। अतः तुम युद्ध न्याय की स्थापना के लिये कर लिये इसलिये यह युद्ध उचित थी

काव्य सौन्दर्य

(1) आधुनिक काल की प्रगतिवादी विचारधारा पर आधारित

(2) युद्ध की नैतिकता पर प्रश्न

(3) न्याय की स्थापना हेतु युद्ध करना उचित

शिल्प सौन्दर्य

(1) सरल-सहज भाषा
कहीं-कही तत्समी शब्द जैसे- अन्वेषणा
- न्याय

(2) विस्मयादिबोधक चिन्ह

(3) तुक बंधी का सुंदर प्रयोग

(4) वीररस और ओजगुण

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(घ) रोई गँवाए बारह मासा। सहस सहस दुख एक एक साँसा।
तिल तिल बरख बरख परि जाई। पहर पहर जुग जुग न सेराई।।
सो नहिं आवै रूप मुरारी। जासों पाव सोहाग सुनारी।।
साँझ भए झुरि झुरि पथ हेरा। कोनि सो घरी करैं पिउ फेरा?।।
दहि कोइला भइ कंत सनेहा। तोला माँसु रही नहिं देहा।।
रकत न रहा, विरह तन गरा। रती रती होइ नैनन्ह ढरा।।
पाय लागि जोरै धन हाथा। जारा नेह, जुड़ावहु नाथा।।
बरस दिवस धनि रोह कै, हारि परी चित झंखि।
मानुष घर घर बूझि कैं, बूझै निसरी पंखि।।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकाल की सूफी - काव्यधारा के कवि मलिक मुहम्मद जायसी की पद्मावत रचना के नागमती वियोगखण्ड से लिया गया है।

प्रसंग - नागमती के विरह को बारहमासा कड़वक रूढ़ि के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

व्याख्या - नागमती कहती है कि मैं बारह माह रोना-गाना कर रही हूं। एक एक साँस में दुख का संचार हो रहा है। जो रोज रोज को बढ़ता ही जा रहा है। फिर मेरे मुरारी रूपी प्रियतम नहीं आते है। और मुझ सुहागन को सुन्दरता प्रदान करे। शाम होते ही मुझे रास्ता

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

धुंधला दिखाई देने लगता है परन्तु फिर भी प्रिय एक बार भी चक्कर नहीं लगाते हैं। मेरा शरीर जलकर कोयले के समान हो गया है जिसमें तोला भर मांस भी नहीं है। खून भी नहीं है, जो मेरे आंखों से बह चुका है। विरह से सारा शरीर निचुड़ गया है और रत्ती-रत्ती होकर नेत्रों से ढुलक रहा है। मैं आपके पैर पड़ती हूं और हाथ जोड़ती हूं। अब टूटा हुआ प्रेम पुनः जोड़ो।

काव्य सौन्दर्य

1) जायसी द्वारा नागमती विरह वर्णन हिन्दी साहित्य का सबसे सुन्दर विरह वर्णन है।
2) बारहमासा कड़वक रूढ़ी का प्रयोग
3) चौपाई के बाद दोहे का छन्द
4) ठेठ अवधी भाषा का प्रयोग
5) प्रकृति को विरह में शामिल किया गया है।
6) प्रतीकों और बिम्बों का सुंदर प्रयोग

drishti | दृष्टि The Vision

(ङ) ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे विद्युत
जागी पृथ्वी-तनया-कुमारिका-छवि, अच्युत
देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन
विदेह का,-प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन
नयनों का-नयनों से गोपन-प्रिय सम्भाषण,-
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-पतन,-
काँपते हुए किसलय,-झरते पराग-समुदय,-
गाते खग-नव-जीवन-परिचय-तरु मलय-वलय,-
ज्योति:प्रपात स्वर्गीय,--ज्ञात छवि प्रथम स्वीय,-
जानकी-नयन-कमनीय प्रथम कम्पन तुरीय।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की महान कविता राम की शक्तिपूजा से ली गई है।

प्रसंग- राम द्वारा सीता से मिलन के क्षण को याद किया गया है।

व्याख्या- जब राम घोर निराशा और अंधकार में डूबे हुए रहते हैं तभी उन्हें सीता की छवि याद आती है। और उन्हें उपवन का वह दृश्य याद आता है जब उन्होंने सीता का पहली बार लताओं के बीच देखा था उनके बीच आंखो ही आंखो में बाते हुई थी।

पेड़ों से कोमल पत्ते नीचे गिरते हैं, और उन पर परागकणों की वर्षा होती है। चारों ओर पक्षी, वन, नये जीवन के सुंदर गीत गाते हैं। सीता के शरीर की चमक बिजली के समान है, सीता की आँखे अत्यधिक सुंदर है।

काव्य सौन्दर्य

(1) छायावादी सौन्दर्य चेतना, प्रकृति वर्णन का प्रयोग बेहद सुन्दर है।

(2) रीतिकालीन शरीरी प्रेम नहीं अपितु सभ्य, सुशील प्रेम

उदा० तेरे छूने में था प्राण, जैसे पवित्र गंगा स्नान (वर्मा)

(3) प्रेम की संयोग पक्ष का वर्णन

शिल्प सौन्दर्य

(1) छायावादी प्रतीको की भाषा

(2) कोमल बिम्ब का प्रयोग

(3) तत्सम शब्दों का प्रयोग – स्वर्गीय

(4) अर्थालंकार का प्रयोग

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

2. (क) 'कबीर एक महान संत और समाज-सुधारक ही नहीं, अद्वितीय कवि भी हैं।' इस कथन के परिप्रेक्ष्य में उन विशेषताओं का निर्देश कीजिए जो कबीर के काव्य की अद्वितीयता के कारण हैं। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

भक्तिकाल के निर्गुणभक्ति धारा के संत कवि कबीरदास का व्यक्तित्व बहु-आयामी व्यक्तित्व है। जिस पर कई दर्शनों, अनुभवों का प्रभाव दिखाई देता है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी द्वारा अपनी पुस्तक कबीर में कहा गया है -

कबीर स्वभाव से संत, प्रकृति से उपदेशक और ठोक-पीटकर कवि हो गए हैं। वास्तव में वह भक्त है। बाकि सभी गुण बलूनमात्र है।

अतः कबीर एक महान संत, समाजसुधारक और अद्वितीय कवि है। महान संत होने की विशेषता -

सुखिया सब संसार है, खावै और सोवै
दुखिया दास कबीर है, जागै और रोवै

अतः संतों की तरह आध्यात्मिकता, निर्भयता, घर-फूंक मस्ती नजर आती है।

drishti | दृष्टि The Vision

कबीर ने समाज मे उपस्थित धार्मिक आडम्बरों, साम्प्रदायिकता, जातिवाद आदि के विरुद्ध आवाज उठायी। इसीलिये उन्हें महान समाजसुधारक की भी संज्ञा दी जाती है -

पाथर पूजे हरि मिलें, तो मैं पुजूँ पहार
ताते तो चाकी भली, जो पीस खाये संसार

अहिंसा, जीव के प्रति प्रेम, दया जैसे गुण -

बकरी पाती खात है ताकी काढ़ी खाल
जे नर बकरी खात है तिनका कौन हवाल

इनसभी के साथ कबीर एक महान कवि है। वे किसी दर्शन के पालन नहीं अपितु बहुश्रुत थे अतः इसी आधार पर उन्होंने काव्य कहें।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

कबीर के काव्य के अद्वितीयता के कारण

① कबीर पर शंकर के अद्वैतवाद, वेदांत दर्शन, नाथ साहित्य के हठयोग, बौद्ध धर्म के अहिंसा सभी का मिश्रित प्रभाव था। जो उन्होंने केवल सुनकर ज्ञान प्राप्त किया था।

"जिन तुम जान्यों गीति है, वह निज ब्रह्म विचार"

अतः कबीर ने कहा जिसे तुम गीत मानते हो वह सिर्फ मेरे विचार मात्र है।

"मसि कागद छुवों नहीं, कलम गही नहीं हाथ"

② कबीर ने मुख्यतः समाज सुधार आधारित काव्य लिखे - प्रारंभिक जीवन में -

कांकर पाथर जोड़ि कै मस्जिद लियो बनाए
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाय

③ कबीर द्वारा ईश्वर प्राप्ति का आसान नहीं बताया इसके लिये कठिन तपस्या करनी होती है -

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सात समंद की मसि करौं, लेखनी सब वनराई

④ प्रारंभिक जीवन में नाथ साहित्य के हठयोग और साधनात्मक रहस्यवाद का प्रभाव

अवधू गगन मण्डल घर कीजै
बंकनालि रस पीजै

⑤ जीवन के अंत में भक्तिपरक और प्रेमपरक आधारित काव्यों की रचना

तलफै बिनु बालम मोर जिया
रात नहीं चैन दिन नहीं निंदिया।
तलफ तलफ के भोर किया।

इस प्रकार कबीर की काव्यात्मकता अनुभव के अनुसार परिवर्तनशील है वे कवि रूप में रचना नहीं करते अपितु उनके साहित्यिक काव्यों की विशेषता ने उन्हें कवि बना दिया है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) 'दिनकर के 'कुरुक्षेत्र' में अपने समय की अनुगूँज़ सुनाई देती है।' इस मत के संदर्भ में कुरुक्षेत्र के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

रामधारी सिंह दिनकर द्वारा कुरुक्षेत्र की रचना, युद्ध की नैतिकता और न्याय की स्थापना हेतु युद्ध की आवश्यकता पर आधारित रचना है।

युद्ध वास्तविक रूप से काम्य नहीं है परन्तु बुराई से लड़ने के लिये किया गया युद्ध नैतिक है।

कुरुक्षेत्र का प्रतिपाद्य

(1) भीष्मपितामह युधिष्ठिर के अपराधबोध और आत्मग्लानि के भाव पर कहते हैं कि जब अन्याय बढ़ जाये तो न्याय की स्थापना हेतु किया गया युद्ध नैतिक माना जाता है -

चुराता न्याय जो, रण को बुलाता वही है,
युधिष्ठिर ! स्वत्व की अन्वेषणा पातक नहीं है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(2) भीष्म कहते हैं जो लोग पाप करते हैं उन्हें नरक प्राप्त होना है न कि उन्हें जो न्याय की स्थापना हेतु युद्ध करते हैं

नरक उनके लिये, जो पाप को स्वीकारते
न उनके लिये, जो रण में उसे ललकारते

(3) भीष्म कहते हैं कि शत्रु हमारी सीमा पर अधिकार करने आ पहुँचे तो युद्ध करना उचित होता है न कि उदासीन बने रहना

जूझना पड़ता है सभी को शत्रु जब
आ गया हो द्वार पर ललकारता

(4) भीष्म द्वारा मानवतावादी विचारों का भी प्रस्तुतिकरण किया गया है।

जब तक मनु मनु का यह सुख भाग न सम होगा।
शमित न होगा कोलाहल संघर्ष नहीं कम होगा

drishti दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(5) इसी प्रकार दिनकर जी द्वारा प्रगतिवादी विचारधारा के अंतर्गत मार्क्सवाद का भी प्रभाव दिखाई देता है।

(6) युद्ध को उस कड़वी दवाई के समान माना गया है जिसे उपचार हेतु खाना जरूरी होता है। उसी प्रकार न्याय की स्थापना हेतु युद्ध भी जरूरी है।

तिक्त औषधि के बिना उपचार क्या
शमित न होगा वह मिष्ठान्न से

इस प्रकार दिनकर ने कुरुक्षेत्र में युद्ध को समय के अनुसार सही ठहराया है। जब आवश्यक हो तब युद्ध करना उचित होता है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) ज़ेन बौद्धमत के प्रभाव के संदर्भ में 'असाध्य वीणा' कविता का विवेचन कीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

असाध्यवीणा, प्रयोगवादी कवि अज्ञेय की एक प्रयोगधर्मी कविता है जिस पर कई दर्शनों का प्रभाव है परन्तु इसका कथ्य मुख्यत: ज़ेन बौद्धमत से प्रभावित है।

जेन बौद्धमत के प्रभाव से असाध्यवीणा

ज़ेन बौद्धमत एक जापानी विचार दर्शन है जिसके अनुसार व्यक्ति की सर्जनात्मकता में आंतरिक अनुभूति का सर्वाधिक महत्व होता है।

- ज़ेन बौद्धमत, बौद्ध धर्म की माध्यमिक शून्यवाद और योगाचार विज्ञानवाद नामक शाखाओं से प्रभावित है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

जिसके अनुसार संसार की प्रत्येक वस्तु शून्य है। इसमें परमात्मा को भी महाशून्य माना गया है-

महाशून्य
जो शब्दहीन है
सबमें गाता वही है।

अतः माध्यमिक शून्यवाद के अनुसार ही जगत शून्य है जब व्यक्ति अपने अंतरात्मा को उस बिंदु पर पहुंचा लेता है जहाँ उसके और जगत के बीच का अंतराल खत्म हो जाता है तभी महाशून्य की प्राप्ति होती है।

- योगाचार विज्ञानवाद के अनुसार, असाध्यवीणा में भौतिकवाद के स्थान पर मानसिक तादात्म्य पर बल जिसकी प्राप्ति केवल योग के माध्यम से संभव है।

drishti | दृष्टि The Vision

- प्रियम्वद ने भी वीणा को योग के माध्यम से आंतरिक मन में साधा था जिससे वीणा बज उठती है।

इस प्रकार असाध्य वीणा में जेन बौद्ध मत एक केंद्रित दर्शन है जिसका प्रभाव सम्पूर्ण कविता में दिखाई देता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

3. (क) 'राम की शक्तिपूजा' में निहित द्वंद्वात्मकता का उद्घाटन करते हुए उसके महत्त्व का निरूपण कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) कामायनी में निहित 'बिंब-सौंदर्य' का उद्घाटन कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) 'ब्रह्मराक्षस' कविता बिंब-निर्माण में नवीनता का परिचय देती है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में 'ब्रह्मराक्षस' कविता की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

4. (क) 'भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर सामने आया हो।' गोस्वामी तुलसीदास लोकनायकत्व की इस कसौटी पर कहाँ तक खरे उतरते हैं? 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

महाकवि तुलसीदास को लोकनायक की उपाधि दी गई है क्योंकि उन्होंने कई विपरित विचारों के बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया।

तुलसीदास की समन्वय क्षमता

① सगुण और निर्गुण भक्ति के बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयास

अगुनहिं सगुनहिं नहिं कछु भेदा

② हिन्दू धर्म के मध्य विभिन्न देवी-देवताओं के भक्ति के माध्यम से समन्वय

उदा० राम के साथ शिव की भक्ति

शिवद्रोही मम दास कहावा, सो नर मोहि सपनेहुँ नहीं भावा।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(3) विभिन्न भाषाओं के बीच समंवय स्थापित करने का प्रयास किया।

उदा० अवधी के साथ-साथ ब्रजभाषा का भी प्रयोग

कपा भाषा का संस्कृत प्रेम चाहिये साँच
काम जो आवै कामरि का लै करिये कुमान्च

(4) भक्ति के साथ योग दर्शन का समन्वय साथ ही ज्ञान का समन्वय

भगतिहिं ग्यानहिं नहीं कछु भेदा

(5) पुरुष और नारी की समानता पर बल दिया है और एकपति और एकपत्नी जैसे विचारों पर बल दिया

एक नारी व्रत रत सब झारी।
ते मन बच क्रम पति हितकारी

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(6) भोग एवं त्याग के बीच समन्वय स्थापित किया

(7) राजा एवं प्रजा के बीच समन्वय स्थापित किया। तथा रामराज्य की स्थापना पर बल दिया।

अल्पमृत्यु नाहिं कवनिउँ पीरा
सब सुन्दर सब विरूज सरीरी
नहिं दरिद्र कोई दुःखी न दीना

इस प्रकार तुलसीदास ने काव्य के विभिन्न ~~तत्वों~~ तत्वो जैसे- रस-, अलंकार, प्रतीक आदि के बीच भी समन्वय स्थापित किया है जो उनकी समन्वयचेतना के साक्षी है।

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

तुलसीदास कहाँ तक खरे उतरे हैं

सीमाएँ

(1) कहीं कहीं नारी को विशेष महत्व नहीं दिया गया।

नारी हानि विशेष क्षति नाहीं।

(2) तुलसीदास द्वारा वर्णव्यवस्था के पालन पर जोर दिया गया है, जातिवादी भेदभाव भी -

ढोल गंवार शूद्र पशु नारि
सकल ताड़ना के अधिकारी

परन्तु माना जाता है कि ये पंक्तियाँ तुलसीदास की नहीं होगी। अतः शबरी और निषादराज जैसे प्रसंग तुलसीदास के लोकनायकत्व की कसौटी को मजबूती प्रदान करते हैं।

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) 'बादल को घिरते देखा है' कविता के शिल्प पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'बादल को घिरते देखा है'

आधुनिक काल के जनकवि नागार्जुन की कविता है। जिसमें मुख्यत: प्रकृति का वर्णन किया गया है।

बादल को घिरते देखा है

शिल्प पक्ष

(1) काव्यरूप - नागार्जुन द्वारा लम्बी कविता की रचना की गई है।

- गीत भी कहा जा सकता है।

- संरचना के आधार पर किसी शास्त्रीय नियम का पालन नहीं करती है।

(2) भाषा - नागार्जुन मूलत: जनकवि है।

drishti दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उन्होंने अपनी कविताओं में ग्राम बोल-चाल की भाषा को शामिल किया है। परन्तु बादलों को घिरते देखा है में तत्समी भाषा का प्रयोग।

परिवेश के अनुकूल

- साथ ही हिमालय के विराट स्वरूप को दिखाने हेतु विजातीय शब्दों का प्रयोग भी -

लय और तुकबंदी - नागार्जुन द्वारा पंक्तियों में बादल को घिरते देखा है की तुकबंदी की गई है।

- साथ ही कविता में आंतरिक लय की उपस्थिति सर्वत्र बनी रहती है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

बिम्ब योजना - नागार्जुन द्वारा बिम्ब योजना के दोनों रूप बिम्बों का प्रयोग

विराट बिम्ब

मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभचुम्बी कैलाश शीर्ष पर
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है।

साथ ही सुकुमार बिम्ब का सुन्दर प्रयोग

प्रतीक योजना - सामान्यत: प्रगतिवादी समीक्षक आरोप करते हैं कि प्रतीक योजना नहीं है।

परन्तु बादल - क्रान्ति का प्रतीक
मेघों का भिड़ना - वर्ग संघर्ष
कस्तूरी मृग की हताशा - मजदूर वर्ग का क्रान्ति से अलगाव

इस प्रकार यह कविता शिल्प की दृष्टि से महान कविता है जो कथ्य की प्रस्तुति में सहायक है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) 'राम की शक्ति-पूजा' निराला की ही 'शक्ति-पूजा' है। इस मत की सार्थकता पर विचार कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

राम की शक्तिपूजा, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की महान कविता है। ऐसा माना जाता है कि निराला ने अपने जीवन के संघर्ष को राम के संघर्ष के माध्यम से निरूपित किया है।

निर्मला जैन ने कहा है - यह एक शक्तिकाव्य है।

निराला की सरोजस्मृति भी उनकी निजी जीवन अनुभूति आधारित थी उसी प्रकार राम की शक्तिपूजा वास्तव में निराला की ही शक्तिपूजा है।

धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध
धिक् जीवन जिसके लिये किलना इतना शोध

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सार्थकता हेतु मत

(1) राम भी रावण के अधिक शक्तिशाली होने के कारण निराशा महसूस करते हैं उसी तरह निराला भी कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण साहित्यिक जीवन में सफल नहीं हो पाते।

" अन्याय जिधर है उधर है शक्ति "

(2) जिस तरह राम को अपनी विजय हेतु संशय रहता है उसी प्रकार निराला का जीवन भी आत्मसंघर्ष और संघर्ष से भरा है।

स्थिर राघवेन्द्र को फिर हिला रहा संशय
बार-बार मन उठता रावण जय भय

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(3) पुत्री की मौत और पत्नी मनोरमा देवी के जाने के बाद पुन: खड़े उठना और राम की शक्तिपूजा कविता की रचना करना, राम के पुन: साहस से भरने के समान है-

आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर
तुम वरो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर

(4) सरोज स्मृति में जो निराला का उदासी भरा काव्य है वह राम की शक्तिपूजा में साहस का परिचय देता है।
वह एक मन रहा राम का जो न थका

इस प्रकार दूधनाथ सिंह ने कहना है वास्तव में यह निराला के स्वयं के जीवन की शक्ति पूजा है।

drishti | दृष्टि The Vision

खण्ड - ख

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

5. **निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिये:** **10 × 5 = 50**

(क) कविता ही हृदय को प्रकृत दशा में लाती है और जगत् के बीच क्रमशः उसका अधिकाधिक प्रसार करती हुई उसे मनुष्यत्व की उच्च भूमि पर ले जाती है। भावयोग की सबसे उच्च कक्षा पर पहुँचे हुए मनुष्य का जगत् के साथ पूर्ण तादात्म्य हो जाता है, उसकी अलग भावसत्ता नहीं रह जाती, उसका हृदय विश्व-हृदय हो जाता है।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य की निबंधपरम्परा के महान निबंधकार आचार्य रामकृष्ण शुक्ल के कविता क्या है निबंध से लिया गया है।

प्रसंग - प्रस्तुत गद्यांश मे कविता के महत्व को दर्शाया गया है।

व्याख्या - शुक्ल जी द्वारा कहा गया है कि कविता ही हमारे हृदय को आनंद की चरम स्थिति तक पहुँचाती है। और जगत और मनुष्य के बीच उस आनंद का अधिकाधिक प्रसार कर मनुष्यत्व को उच्च स्थान पर पहुँचाती है। ऐसा मनुष्य जो कविताओं के माध्यम से भावना के सहारे उच्च स्थान पर पहुँचता है। उसका जगत के साथ एक

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

तादात्म्य बन जाता है। उसकी कोई भिन्न सत्ता नहीं रहती वह आत्मचेतस से विश्वचेतस बन जाता है। संसार मे विलीन हो जाता है।

विशेष

(1) शुक्ल जी द्वारा कविता के महत्व को मानव जीवन में चरम आनंद का साधन माना गया है।

(2) कविता ही मानव और जगत के बीच के अंतर को कम करती है।

तुलना - कबीर के काव्य से

'जल मे कुंभ कुंभ में जल है बाहर-भीतर पानी
फूटा कुंभ जल जलहि समाना इहै तथ कहै ग्यानी

(3) भाषा - सरल - सहज
तत्समी शब्दों का प्रयोग - रसदशा
तादात्म्य

(4) ~~खड़ी~~ खड़ी-बोली का प्रयोग

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) प्रमाण! प्रमाण अभी खोजना है? आँधी आने के पहले आकाश जिस तरह स्तम्भित हो रहता है, बिजली गिरने से पूर्व जिस प्रकार नील कादम्बिनी का मनोहर आवरण महाशून्य पर चढ़ जाता है, क्या वैसी ही दशा गुप्तसाम्राज्य की नहीं है?

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य की नाटक विधा के महान नाटककार जयशंकर प्रसाद के नाटक स्कन्दगुप्त से लिया गया है।

प्रसंग - हूणों के आक्रमण से पहले गुप्तसाम्राज्य के वातावरण का वर्णन किया गया है।

व्याख्या - मातृगुप्त कहते हैं कि क्या अभी भी आपको प्रमाण खोजना है कि आक्रमण हो सकता है। जिस तरह आंधी आने से पहले आकाश स्तंभित हो जाता है। बिजली गिरने से पहले नीले आसमान का सुन्दर आवरण महाशून्य पर चढ़ जाता है। ऐसी ही दशा अभी गुप्तसाम्राज्य की हो गई है। ऐसे वातावरण महासंकट की ओर इशारा करते हैं।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

विशेष

(1) जयशंकर प्रसाद द्वारा ऐतिहासिक उपन्यास लिखा गया है।

(2) इतिहास का प्रयोग उपयोगितावादी नजरिये से

(3) स्कन्दगुप्त - चरित्तप्रधान नाटक

(4) वातावरण के माध्यम से युद्ध संकट का प्रवाह

(5) भाषा - परिवेशानुकूल
तत्समी शब्द - स्तंभित
कादम्बिनी

(6) विस्मयादिबोधक और प्रश्न चिन्हों का उचित प्रयोग

(7) पुनरावृत्ति शैली - प्रमाण प्रमाण

(8) बिम्बों का प्रयोग

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) मुझे यह कहने में हिचक नहीं कि मैं और चीजों की तरह कला को भी उपयोगिता की तुला पर तौलता हूँ। निस्सन्देह कला का उद्देश्य सृष्टि की पुष्टि करना है और वह हमारे आध्यात्मिक आनन्द की कुंजी है, पर ऐसा कोई रुचिगत मानसिक तथा आध्यात्मिक आनन्द नहीं, जो अपनी उपयोगिता का पहलू न रखता हो।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य की उपन्यासधारा के महान प्रगतिवादी चेतना के लेखक यशपाल के दिव्या उपन्यास से लिया गया है।

प्रसंग- मारिश के माध्यम से कला के विषय में दर्शन का प्रयोग।

व्याख्या- मारिश अपनी मार्क्सवादी चेतना से प्रेरित होकर कहता है कि मुझमें इस बात की कोई शंका नहीं कि मैं कला को अन्य चीजों की तरह उपयोगिता की तुला पर तौलता हूं। मैं जानता हूं कि कला का उद्देश्य सृष्टि की पुष्टि करना है और वह हमारे आत्मा की शान्ति और आनंद की कुंजी है। परन्तु ऐसा कोई मानसिक और आध्यात्मिक

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

आनंद नहीं है जो उपयोगितावादी नजरिये पर आधारित न हो।

विशेष

(1) यशपाल द्वारा मार्क्सवादी दर्शन के अनुसार - कला को उपयोगितावादी नजरिये से देखना

(2) कला संसार की संरचना और आध्यात्मिक आनंद की कुंजी है।

(3) भाषा - परिवेशानुकूल तत्सम
जैसे - आध्यात्मिक
- आनंद जैसे शब्द

(4) प्रतीक चिन्हों का यथास्थान प्रयोग

(5) खड़ी बोली

drishti | दृष्टि The Vision

(घ) जीवन का कोई अनुभव स्थायी और चिरन्तन नहीं। जीवन की स्थिति समय में है और समय प्रवाह है। प्रवाह में साधु-असाधु, प्रिय-अप्रिय सभी कुछ आता है। प्रवाह का यह क्रम ही सृष्टि और प्रकृति की नित्यता है। जीवन के प्रवाह में एक समय असाधु, अप्रिय अनुभव आया इसलिये उस प्रवाह से विरक्त होकर जीवन की तृषा को तृप्त न करना केवल हठ है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य के महान प्रगतिवादी उपन्यासकार यशपाल के दिव्या उपन्यास से लिया गया है।

संदर्भ- यह गद्यांश दिव्या के अंशुमाला खण्ड से लिया गया जब रत्नप्रभा (दिव्या) को जीवन दर्शन पर ज्ञान देती है।

व्याख्या- रत्नप्रभा (अंशुमाला (दिव्या) से कहती है कि जीवन को कोई अनुभव स्थायी और चिरन्तन नहीं है। जीवन की स्थिति समय के साथ परिवर्तित होती रहती है। जीवन में अच्छा-बुरा, नैतिक-अनैतिक सब आता है। प्रवाह का यह क्रम प्रकृति का सर्वमान्य नियम है। यदि जीवन में कोई एक बुरा अनुभव आ भी जाये तो जीवन

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

को त्याग नहीं दिया जाता है। अपने आप को उस प्रवाह से अलग करना, जीवन को प्राप्त न करना, जीद मात्र है।

विशेष

(1) यशपाल द्वारा मार्क्सवादी दर्शन का प्रयोग

(2) जीवन के परिवर्तनशील निरन्तरता पर प्रकाश डाला गया है।
बौद्ध दर्शन से प्रभावित

(3) भाषा - परिवेशानुकूल
तत्समी - प्रवाह
नित्यता

(4) ~~उचित~~ प्रतीक चिन्हों का उचित प्रयोग

drishti | दृष्टि The Vision

(ङ) उसकी आंखें बन्द हो गयीं और जीवन की सारी स्मृतियाँ सजीव हो-होकर हृदय-पट पर आने लगीं, लेकिन बे-क्रम, आगे की पीछे, पीछे की आगे, स्वप्न-चित्रों की भाँति बेमेल, विकृत और असम्बद्ध। वह सुखद बालपन आया, जब वह गुल्लियाँ खेलता था और माँ की गोद में सोता था। फिर देखा, जैसे गोबर आया है और उसके पैरों में गिर रहा है। फिर दृश्य बदला, धनिया दुलहिन बनी हुई, लाल चुंदरी पहने उसको भोजन करा रही थी। फिर एक गाय का चित्र सामने आया, बिल्कुल कामधेनु-सी। उसने उसका दूध दुहा और मंगल को पिला रहा था कि गाय एक देवी बन गयी और...।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य की उपन्यास विधा के महान उपन्यासकार मुंशी प्रेमचंद द्वारा 1936 में रचित गोदान नामक उपन्यास से लिया गया है।

प्रसंग- यह होरी की मृत्यु के समय का वर्णन है।

व्याख्या- होरी जब अपने जीवन की अंतिम सांसे ले रहा था तब उसकी आँखें बंद हो गई जीवन की सभी यादें उसके हृदय में सजीव रूप में आने लगी। जो क्रमबद्ध न होकर विकृत और बेमेल थी जैसे सपने में होता है। सबसे पहले बचपन की याद जब वह गुल्ली डंडा खेलता था। माँ की गोद में सोता था फिर गोबर की याद फिर धनिया उसे दुल्हन रूप में लाल

drishti दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

चुन्दरी मे नजर आती है। जो उसे भोजन परस रही है। फिर एक गाय का चित्र आता है जो बिल्कुल कामधेनु समान है वह उसका दूध निकालकर, गोबर को पिलाता है और उसी समय गाय देवी का रूप धारण कर लेती है।

विशेष

(1) प्रेमचंद द्वारा आदर्शवादी उपन्यास के स्थान पर यथार्थवादी उपन्यास की रचना

(2) होरी की गाय पालने की इच्छा को मार्मिक चित्रण

(3) त्रासदयुक्त अंत – जीवनेच्छा पूर्ण न हो पाना

(4) भाषा - सरल - सहज - बोधगम्य

(5) चित्रभाषा का सुन्दर प्रयोग

(6) संस्मरणात्मक लेखन शैली

(6) तत्समी शब्द – असम्बद्ध, विकृत

6. (क) 'प्रसाद की नाट्यभाषा उनके नाटकों की अभिनय-संभावनाओं को क्षरित करती है।' स्कंदगुप्त के आधार पर इस मत का परीक्षण कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) 'दिव्या' उपन्यास के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) आप आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंधों को वस्तुनिष्ठ मानते हैं या व्यक्तिनिष्ठ? अपना मत प्रकट कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

7. (क) 'मैला आँचल में डॉ. प्रशांत का चरित्र लेखक के सपनों एवं आदर्शों का प्रतीक बनकर उपस्थित हुआ है और इस कारण उसकी विश्वसनीयता खंडित हो गई है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में डॉ. प्रशांत के चरित्र का अवलोकन कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में 'मल्लिका' के रूप में मोहन राकेश एक अविस्मरणीय चरित्र की सर्जना में कहाँ तक सफल सिद्ध हुए हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) 'महाभोज' उपन्यास में निहित नाटकीयता के उन बिंदुओं को रेखांकित कीजिये जिनके कारण उसका नाट्य-रूपांतरण रंगमंच पर सफल सिद्ध हुआ है। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

8. (क) स्कंदगुप्त सुखांत नाटक है या दुखांत, या प्रसादांत? अपना तार्किकमत प्रकट कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

स्कंदगुप्त, महान नाटककार जयशंकर प्रसाद का चर्चित प्रख्यात, ऐतिहासिक नाटक है। जिसमें गुप्तसाम्राज्य पर हूणों के आक्रमण के काल का कथानक लिया गया है।

सामान्यत: भारतीय परम्परा मे सुखान्त नाटको की परम्परा रही है जिसमें नाटक का अंत किसी सुखद परिणाम के साथ होता है।

वही दूसरी ओर पाश्चात्य साहित्य मे दुखान्त नाटकों की परम्परा रही है जिसमें नाटकों का अंत दु:खद घटना के साथ त्रासदपूर्ण होता है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

परन्तु दोनों ही परम्परा से भिन्न जयशंकर प्रसाद ने एक नई परम्परा का निर्माण किया है जिसमें नाटक का अंत न तो पूर्णतः सुखद है और न ही पूर्णतः दुःखद अपितु इनका मिश्रण है जिसे प्रसादान्त नाटक की संज्ञा दी गई है।

सुखान्त होने के लक्षण

(1) गुप्त साम्राज्य से हूणों के आक्रमण का संकट खत्म हो चुका है।

(2) बौद्धों और ब्राह्मणों के वैचारिक मतभेद समाप्त हो चुके हैं।

(3) स्कंदगुप्त के परिवार के सभी बुरे लोगों का हृदय परिवर्तन हो चुका है।

drishti दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

दुखांत होने के कारण

(1) स्कंदगुप्त में अंत में दुखी दिखाई देता है।

(2) देवसेना और स्कंदगुप्त के बीच परस्पर प्रेम और सम्मान है परन्तु वे एक नहीं हो पाते है।

प्रसादांत होने के कारण

(1) देवसेना द्वारा प्रेम के आध्यात्मिक रूप की स्थापना की जाती है।

(2) शारीरिक प्रेम के स्थान पर आध्यात्मिक प्रेम को महत्व दिया जाता है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उपरोक्त आधारों पर प्रसाद के नाटक न तो पूर्णतः सुखद है और न ही पूर्णतः दुःखद अपितु दोनों का मिश्रण है।

अतः प्रसादान्त नाटक की परम्परा प्रसाद का मौलिक उद्भव है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) रामचंद्र शुक्ल के निबंध 'श्रद्धा-भक्ति' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

रामचंद्र शुक्ल का निबंध

श्रद्धा-भक्ति एक मनोविकारपरक निबंध है। जिसमें श्रद्धा और प्रेम के साथ ही श्रद्धा और भक्ति जैसे मूल्यों के बीच अंतर प्रदर्शित किया गया है।

श्रद्धा-भक्ति का प्रतिपाद्य

(1) प्रेम और लोभ समान मूल्य नहीं है। लोभ, बाहरी विशेषताओं जैसे - धन, सुन्दरता के आकर्षण के कारण जबकि प्रेम आंतरिक गुणों के कारण।

(2) श्रद्धा के प्रकार – प्रतिभा संबंधिनी श्रद्धा
– शील संबंधिनी श्रद्धा
– साधन संबंधिनी श्रद्धा

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(7) साथ ही प्रतिभा के प्रकारों का भी वर्णन किया गया है
- कारयित्री प्रतिभा (कवि की)
- भावयित्री प्रतिभा (पाठक की)

(5) इसके साथ श्रद्धा और प्रेम के बीच अंतर को स्पष्ट किया गया है।

श्रद्धा	प्रेम
- आंतरिक गुणों के कारण	- बाहरी गुणों के कारण भी हो सकता है।
- कर्म से व्यक्ति तक	- व्यक्ति से कर्म तक
- तीन लोग - श्रद्धेय, श्रद्धालु, श्रद्धेय के कार्य	- दो लोग - प्रेमी, प्रेमिका
- सामाजिक भाव	- व्यक्तिगत भाव
- अधिकार नहीं	- अधिकार की इच्छा
- विस्तृत भाव	- संकीर्ण भाव

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(5) श्रद्धा के महत्व स्थापित करने के बाद श्रद्धा और भक्ति के बीच अंतर

श्रद्धा	भक्ति
- कम सक्रिय	- अधिक सक्रिय
- अप्रत्यक्ष संबंध	- प्रत्यक्ष संबंध
- स्वयं का अस्तित्व बना रहता है	- अस्तित्व विलीन हो जाता है।
- किसी प्रतिदान की चाहत नहीं	- साहचर्य की चाहत
- श्रद्धालु और श्रद्धेय में अंतर	- अंतर खत्म हो जाना है।
	- भक्त स्वयं आराध्य बन जाता है।

इस प्रकार शुक्ल जी ने श्रद्धा और भक्ति को सूक्ष्म रूप से परिभाषित कर महत्व स्थापित किया है।

(ग) 'कफन' की संवेदना पर विचार कीजिये। क्या यह कहानी दलित-विरोधी है? 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

कफन कहानी मुंशी प्रेमचंद की एक यथार्थवादी कहानी है जिसमें उन्हें आदर्शवाद को पूर्णतः त्यागकर यथार्थवाद को चित्रित किया है।

संवेदना।

(1) कफन कहानी में कई सामाजिक और आर्थिक समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है।
जैसे - माधव और घीसू द्वारा अपनी पत्नी और बहू के प्रति संवेदनाहीनता सामाजिक भेदभाव का परिणाम है।

(2) समाज द्वारा आवश्यकता के समय में सहायता न करना जबकि

drishti | दृष्टि The Vision

विवशता में सहायता करना

यदि यह पाँच रुपये पहले ही मिल गये होते तो दवा-दारु के काम आते।

(3) गरीब वर्ग का संसाधन रहित होना और अमीर वर्ग का और अधिक अमीर होना - सामाजिक-आर्थिक असमानता को दर्शाता है।

वह बैकुण्ठ न जायेगी तो क्या ये मोटे-मोटे लोग बैकुण्ठ जायेंगे।

(4) अभाव में गरीबों का जीवन समाप्त होना। उदा० बुधिया की मौत

क्या यह कहानी दलित विरोधी है।

प्रेमचंद पर आरोप लगाये जाते हैं कि घीसू और माधव को उदासीन, कायर दिखाना, दलित विरोधी मानसिकता के प्रमाण हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

परन्तु वास्तव में प्रेमचंद तात्कालिक समाज को यथार्थपूर्ण प्रस्तुत करना चाहते थे।

गोदान में सीलिया-मातादीन, दातादीन के माध्यम से भी यही प्रयास किया गया है।

अतः कफन दलित विरोधी नहीं अपितु पूर्णतः यथार्थवादी कहानी है।